शास्त्री - Ist · "Market Situation" (बाजार सम्बन्धी स्थितियाँ) Bl. 10/8/20 शास्त्री - Ist Part

प्रतियोगिता की दृष्टि से बाजार में तीन प्रकार की स्थितियाँ हो सकती हैं — ① पूर्ण प्रतियोगिता Perfect-Competition ② अपूर्ण प्रतियोगिता (Imperfect-Competition) ③ एकाधिकार (Monopoly)

① पूर्णप्रतियोगिता की बाजार :- इस तरह के बाजार में क्रेताओं तथा विक्रेताओं के बीच पूरी प्रतिस्पर्द्धा होती है। पूर्णप्रतियोगिता की बाजार में वस्तु की कीमत सभी जगह एक समान होती है। इस प्रकार के बाजार में क्रेता एवं विक्रेता को वस्तु के मूल्य के सम्बन्ध में पूरी जानकारी होती है। श्रीमती जोन रॉबिन्सन के अनुसार पूर्णप्रतियोगिता की स्थिति में प्रत्येक उत्पादक के उत्पादन की माँग पूर्णतया लोचदार होती है। जिसका तात्पर्य यह है कि इस बाजार में विक्रेताओं की संख्या अधिक होती है तथा इसमें क्रेता प्रतियोगी विक्रेताओं के बीच चुनाव करने की दृष्टि से समान होते हैं, जिससे बाजार पूर्ण हो जाता है। किसी वस्तु के बाजार पूर्णप्रतियोगिता की स्थिति होने पर उस वस्तु का मूल्य सर्वत्र एक समान होता है। किन्तु वास्तविक जीवन में पूर्णप्रतियोगिता की स्थिति देखने को नहीं मिलती है। इसलिए कहा जाता है कि पूर्णप्रतियोगिता एक कल्पना मात्र (Perfect-Competition is a myth). ② अपूर्ण प्रतियोगिता (Imperfect-Competition) → वास्तव में किसी भी देश में न तो पूर्णप्रतियोगिता पायी जाती है और न ही पूर्ण एकाधिकार की स्थिति पायी जाती है। अतएव आधुनिक जीवन जगत में जैसा कि Mrs Joan Robinson ने कहा है — "वास्तविक जीवन में सिर्फ अपूर्ण प्रतियोगिता ही पायी जाती है।" अपूर्ण प्रतियोगिता पूर्णप्रतियोगिता एवं एकाधिकार के बीच की स्थिति है यानी अपूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में किसी वस्तु के विक्रेता थोड़ी संख्या में होते हैं साथ ही उनकी वस्तुओं के रूप में भिन्नता पायी जाती है। साधारणतया अपूर्णप्रतियोगिता की स्थिति में किसी व्यक्तिगत फर्म की वस्तु की माँग पूर्णतया लोचदार नहीं होती है। Prof-Lerner ने इस बाजार को निम्न तरह से स्पष्ट किया है — "अपूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति तब होती है, जबकि विक्रेताओं के लिए गिरती हुई माँग की रेखा का सामना करना पड़ता है। Imperfect-Competition obtained when the seller is confronted with a falling demand curve for his products."

③ एकाधिकार (Monopoly) :- जब वस्तु के [illegible] स्थानापन्न नहीं होते हैं तो एकाधिकार प्रतियोगिता की ऐसी स्थिति को एकाधिकारी प्रतियोगिता कहते हैं। एकाधिकारी प्रतियोगिता के अन्तर्गत विक्रेताओं की संख्या अधिक होती है किन्तु सभी विक्रेता वस्तुओं के [illegible] बिलकुल स्थानापन्न नहीं होते प्रकारों को बेचते हैं क्योंकि ये एक दूसरे की [illegible] प्राप्त रहता है। अतएव प्रत्येक विक्रेताओं को एक सीमा के अन्तर्गत एकाधिकार एवं पूर्णप्रतियोगिता का मिश्रण इस प्रकार एकाधिकार प्रतियोगिता को एकाधिकार एवं [illegible] कह सकते हैं। आजकल वास्तविक जीवन में अधिकांशतः एकाधिकार प्रतियोगिता की स्थिति ही देखने को मिलती है। —— x —— x ——

Alam 10/8/20.

R. N. S. College Sahibganj Purnea.

10/08/20 बैंकों का उद्भव एवं विकास कैसे हुआ? शास्त्री-IInd Part-
for 2020 Exam.

बैंकों की उत्पत्ति के संबंध में कोई निश्चित समय
नहीं बताया जा सकता है। फिर भी इतना अवश्य कहा
जा सकता है कि बैंकिंग व्यापार किसी न किसी रूप में प्राचीन काल
में भी भारत एवं यूरोप के देशों में प्रचलित था। भारत में
वैदिक युग (Vedic Period) से ही बैंकिंग का कार्य होता आ रहा है।
देशी बैंकर - सेठ साहूकार मुख्यतः एक मुद्रा को दूसरी मुद्रा में
बदलने का कार्य करते थे और आवश्यकता पड़ने पर लोगों को
ब्याज पर या बिना ब्याज के भी ऋण दिया करते थे। पहले ये
जमा स्वीकार नहीं करते थे। ये बैंकर युद्ध, अकाल एवं संकट के
समय राजा को भी मदद करते थे। कुछ दिनों के बाद में
जमा भी स्वीकार करने लगे। इटली में प्राचीन रोम राज्य में भी
बैंकों का विवरण हमें मिलता है, यूनान (Greece) में भी
इस तरह के बैंक थे।

'बैंक' शब्द के उत्पत्ति के संबंध में भी अर्थशास्त्रियों
में मतभेद है। इस सम्बन्ध में दो विचारधाराएँ हैं, एक
विचारधारा के अनुसार बैंक शब्द का उद्गम इटालियन शब्द
बैंको (Banco) से हुआ है। प्राचीन इटली में 'बैंक' शब्द का प्रयोग
उनके लिए किया जाता था जो बाजार में बेंचों पर बैठकर
मुद्रा परिवर्तन का कार्य करते थे। उस समय इटली में बहुत से
छोटे-छोटे राज्य (City states) थे जिनकी मुद्राएँ अलग-अलग
थी, बेंचों पर बैठकर मुद्रा परिवर्तन करने वालों के पास सभी
देशों के सिक्के रहते थी इनके कार्यों से यात्रियों एवं व्यापारियों
को बड़ी सुविधा होती थी। एक अन्य विचारधारा के अनुसार
जिसका प्रतिपादन मुख्यतः मैकडॉनाल्ड (Macdonald) तथा
कीथ (Keith) ने किया। 'बैंक' शब्द जर्मन भाषा के शब्द
'बैंके' (Banke) से निकला है। जिसका अर्थ होता है ढेर या
... अंग्रेजी में आने पर बैंक (Bank)
पहुँचा। यही बैंक शब्द अंग्रेजी में आने पर बैंक (Bank) शब्द का प्रयोग होने
लगा। लेकिन सर्वप्रथम इस शब्द का प्रयोग इटली
में मध्य युग (Middle Ages) में बैंक ऑफ वेनिस (Bank of
Venice) की स्थापना के साथ हुआ। सन् 1171 ई० में

P. T. O —

क्रमशः

वैनिस राज्य (State of venice) युद्ध में उलझ गया था, युद्ध खर्च को जुटाने के लिए जनता को अपनी आय का एक प्रतिशत राज्य को उधार देने का आदेश दिया गया। इस इकट्ठे धन से एक ढेर बन गया। इसे जर्मन भाषा में Banke कहा गया, और अंग्रेजी भाषा में बैंक (Bank).

आधुनिक बैंकों का शुभारंभ 17वीं शताब्दी के प्रारंभ में हुआ। जब 1609 ई० में Bank of Amsterdam (Holland) सन 1619 में Bank of Hamburg (जर्मनी) और सन 1694 ई० में Bank of England की स्थापना एक महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है।

R.N.S. College Sukhsena. Prof. [illegible]
10/08/20.

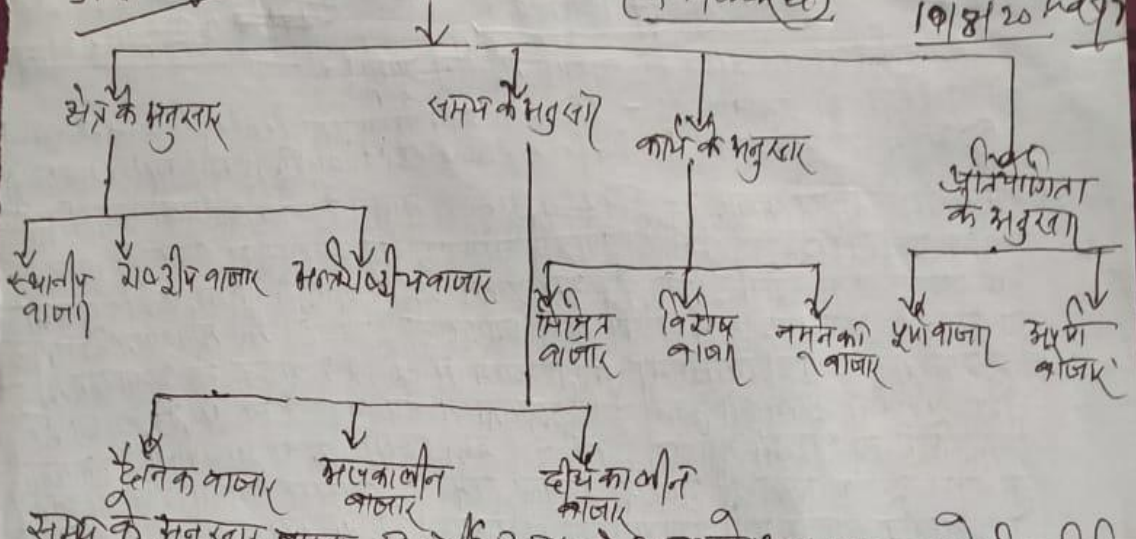

अर्थशास्त्री - IInd बाजार का वर्गीकरण classification (of Market) अर्थशास्त्री 10/8/20

समय के अनुसार बाजार का वर्गीकरण → समय के अनुसार बाजार को निम्नलिखित चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। — ① दैनिक बाजार (Daily Market)

समय के अनुसार :- समय के अनुसार बाजार को चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।—

① दैनिक बाजार (Daily Market) :- इस प्रकार के बाजार में वस्तु की पूर्ति उसके stock तक ही सीमित होती है यानी इस तरह के बाजार में पूर्ति के stock में परिवर्तन नहीं किया जा सकता है अतएव वस्तु की माँग बढ़ जाने पर उसकी पूर्ति में समय न होने के कारण माँग के अनुसार परिवर्तन नहीं किया जा सकता है इसलिए इस बाजार के मूल्य निर्धारण में पूर्ति की अपेक्षा माँग की ही प्रधानता रहती है ② अल्पकालीन बाजार (Short Period Market) इस प्रकार के बाजार की अवधि दैनिक अथवा तात्कालिक बाजार से अधिक होती है। अल्पकालीन बाजार में किसी वस्तु की पूर्ति में माँग के अनुसार कुछ हद तक परिवर्तन किया जा सकता है किंतु पूर्ण रूप से पूर्ति में परिवर्तन का पूरा-पूरा समय नहीं मिल पाता है इस प्रकार के बाजार में भी उत्पादक श्रम आदि की संख्या में परिवर्तन करके थोड़ी ही पूर्ति में परिवर्तन करते हैं। इसलिए अल्पकालीन बाजार में भी मूल्य के निर्धारण में पूर्ति की अपेक्षा माँग पक्ष की ही प्रधानता रहती है ③ दीर्घकालीन बाजार (Long Period Market) :- जिस अवधि में किसी वस्तु की पूर्ति में माँग के अनुसार कुछ हद तक परिवर्तन किया जा सकता है उस अवधि के बाजार को दीर्घकालीन बाजार कहते हैं। इसमें पूर्ति में परिवर्तन लाने के लिए उत्पादक फर्मों की संख्या में परिवर्तन लाया जा सकता है। उदाहरण के लिए यदि समाज में मछली खाने वाली संख्या में वृद्धि हो जाए तो इस बाजार में मछली विक्रेता की संख्या में वृद्धि होती चली जाएगी। साथ ही लोग अधिक मात्रा में मछली पालन का प्रयास करेंगे। इससे मछली की पूर्ति में पर्याप्त वृद्धि हो जाएगी इससे बढ़ी हुई मछली की माँग को पूरा किया जा सके। इस प्रकार दीर्घकालीन बाजार में मछली के मूल्य निर्धारण में माँग की अपेक्षा पूर्ति का प्रभाव अधिक पड़ता है

④ अति दीर्घकालीन बाजार (Very Long Period Market) :- अति दीर्घकालीन बाजार का संबंध एक बहुत लम्बी अवधि से होता है जिसके अन्तर्गत उपभोक्ताओं की रुचि, फैशन एवं जनसंख्या आदि के परिवर्तन को ध्यान में रखकर पूर्ति में पूरा-पूरा परिवर्तन किया जा सकता है यहाँ पर उत्पादकों को वस्तु की पूर्ति में माँग के अनुसार परिवर्तन लाने का बहुत अधिक समय मिलता है — x — x R.N.S. College Sukhdeua - [signature] 10/8/20